भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्

(हिन्दी परिशिष्ट)

खंड २४] जून १९७२ [अंक १

अनुक्रमणिका

अनिश्चितता के माप गणितीय प्रक्रमन तथा भौतिकी
—जे० एन० कपूर iii

रसायनिक तुला पर तोलने की अभिकल्पनाओं पर कुछ विचार
—ए० डे iii

निश्चित सस्यावर्तन में कपास पर प्रयोग किए गए दीर्घकालीन उपचारों का अध्ययन
—डी० के० दत्ता-रोय iv

भारत के उपराष्ट्रपति श्री० जी० एस० पाठक द्वारा उद्घाटन भाषण v

भारतीय कृषि में वृद्धि तथा असन्तुलन
—डा० धर्म नारायण vi

भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था की रजत जयन्ती अधिवेशन के उद्घाटन के अवसर पर 24 मार्च 1972 को श्री जगजीवन राम, रक्षामन्त्री एवं संस्था के प्रधान, द्वारा प्रारम्भिक भाषण vii

भारतीय कृषि सांख्यिकीय संस्था के कार्यों का पुनर्विलोकन viii

भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था, नई दिल्ली—आय-व्यय लेखा xii

भारतीय कृषि सांख्यिकीय संस्था, नई दिल्ली
—आय-व्यय (पत्रिका) लेखा xiv

अनिश्चितता के माप गणितीय प्रक्रमन तथा भौतिकी

जे० एन० कपूर
भारतीय टैक्नोलॉजी संस्था, कानपुर

सारांश

(i) सीमित धन से सूचना लाभ को अधिकतम करने के विचार से साधनों के नियत करने की समस्या का समाधान शन्नोन एवम् रेनयो की ऐन्ट्रॉपियों के प्रयोग द्वारा किया गया है।

(ii) हमारी α कोटि तथा β प्रकार की ऐन्ट्रॉपी के लिये, इस प्रश्न से नैकघात पूर्णांक भिन्नात्मक फलनक प्रक्रमन का प्रश्न उत्पन्न होता है।

(iii) शन्नोन की ऐन्ट्रॉपी द्वारा सांख्यिकीय यन्त्र विज्ञान का बाल्टज़मैन वंटन उत्पन्न होता है। बोस-आईन्सटीन तथा फर्मी-डिराक एन्ट्रॉपियाँ, जिनसे उनके संगत सांख्यिकीय यन्त्र विज्ञान के वंटन उत्पन्न होते हैं, प्राप्त की गई हैं तथा उनके कुछ गुणों को अध्ययन किया गया है।

रसायनिक तुला पर तोलने की अभिकल्पनाओं पर कुछ विचार

ए० डे
कृषि सांख्यिकीय अनुसंधान संस्था, दिल्ली

वर्तमान लेख में रसायनिक तुला प्रश्न के लिये उपयुक्त विभिन्न तोलने की अभिकल्पनाओं पर विचार किया गया है। यह सिद्ध किया गया है कि इन में से कुछ 'आवृत्तित' अभिकल्पनाओं से श्रेष्ठ हैं।

निश्चित सस्यावर्तन में कपास पर प्रयोग किये गये दीर्घकालीन उपचारों का अध्ययन

डी० के० दत्ता-रोय

कृषि अनुसन्धान सहयोग शाला, सूडान

सारांश

किसी निश्चित सस्यावर्तन में विभिन्न उपचारों की तुलना करने के विचार से गैज़ीरा अनुसन्धान स्टेशन पर 1935 से 1958 की अवधि में एक प्रयोग किया गया था। कपास की उपज को दो श्रेणियों, एक तो सस्यावर्तन के डूरा लैग से जो कि उपचारों के सीधे प्रभाव को मापती है तथा दूसरी लुविया लैग से जो उपचारों के शेष प्रभाव को मापती है, का अध्ययन किया गया था। डूरा लैग में उपचार प्रभाव लुबिया लैग की अपेक्षा बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण थे। डूरा लैग में कपास की उपज में, उपचार प्रभावों का वास्तविक ऋतु सम्बन्धी विचरण उपचार प्रभावों में मन्द परिवर्तनों के कारण विचरण को भी दूर करके प्राप्त किये गये थे। उपचार प्रभावों में एक वर्ष से दूसरे वर्ष के विवरण को विचाराधीन लाने के लिए इस कारण द्वारा विचरण को मानक त्रुटियों के आकलन में सम्मिलित कर लिया गया था।

यह स्पष्ट था कि गैज़ीरा भूमि में जैव खाद की अनुक्रिया उपयोगी थी, यद्यपि भूमि में उपलब्ध नाइट्रोजन के रूप में खाद क्षमता उतनी ही मात्रा में अजैव उर्वरकों के सीधे प्रयोग की अपेक्षा काफ़ी कम थी। यह भी सिद्ध किया गया था कि उपचारों की अनुक्रिया वही थी चाहे उन्हें कपास बोने से छः मास पूर्व अथवा 18 मास पूर्व प्रयोग किया गया हो। इस प्रयोग का सबसे महत्वपूर्ण लक्षण सस्यावर्त्तन में उगायी गयी तथा उसके पश्चात् भेड़ों द्वारा चरी गयी लुबिया की अनुक्रिया थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि उपचार सामग्री में उपलब्ध नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ने के साथ-साथ लुबिया की अनुक्रिया कम होती गई।

भारत के उपराष्ट्रपति श्री जी० एस० पाठक द्वारा उद्घाटन भाषण

सारांश

अपने उद्घाटन भाषण में भारत के उपराष्ट्रपति श्री गोपालस्वरूप पाठक ने संस्था की, उन महान् सेवाओं के लिये जो कि इसने अपने 25 वर्ष के अति उपयोगी जीवनकाल में देश को अर्पित की हैं, बहुत प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि कृषि सम्बन्धी आँकड़ों, जो कि हमारी कृषि विकास योजनाओं तथा नीतियों का मुख्याधार हैं, को सुधारने में संस्था ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारत विकास के, विशेषत: कृषि क्षेत्र में, बहुत महत्त्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है तथा इसलिये विकास सम्बन्धी योजनाओं के लिये उपयोगी सूचना एकत्रित करने के लिये नई विधियों की आवश्यकता है। यद्यपि सांख्यकी सिद्धान्तों के विकास में काफी प्रगति हुई है, परन्तु दुर्भाग्य से उनका व्यावहरिक उपयोग पिछड़ रहा है तथा उन्हों ने कहा कि संस्था नई विधियों को लोकप्रिय करने के लिये उदाहरणों सहित पुस्तकें छाप कर भारी योगदान दे सकती है। उन्होंने आशा व्यक्त की, कि संस्था 'आँकड़े कोष' की स्थापना में सहायता करेगी जिससे कि प्रयोग करने वालों को उपयोगी सूचना सुलभ हो सकेगी तथा इससे योजनाओं की रूपरेखा बनाने में सहायता मिलेगी। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि संस्था को संगोष्ठियों तथा परिसंवादों का आयोजन करना चाहिये जिससे कि तात्कालिक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया जा सके।

उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि संस्था का अनुसंधान विभाग बहुत उपयोगी अनुसंधान कार्य कर रहा है तथा आशा व्यक्त की कि यह विभाग पूर्ण अनुसंधान खण्ड के रूप में विकसित हो जायेगा तथा यह उन समस्याओं के सुलझाने में योगदान देगा जिनका समाधान अभी तक नहीं हो सका है तथा इससे संस्था निजी क्षेत्र संगठनों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये 'परामर्श सेवाएँ' प्रदान कर सकेगी।

भारतीय कृषि में वृद्धि तथा असन्तुलन

कृषि मूल्य आयोग, भारत सरकार, के अध्यक्ष
डा० धर्म नारायण द्वारा प्रावैधिक भाषण

सारांश

भारतीय कृषि सांख्यिकीय संस्था के 25वें वार्षिक सम्मेलन में, 24 मार्च, 1972 को प्रस्तुत किये गये भाषण में कृषि मूल्य आयोग के अध्यक्ष डा० धर्म नारायण ने भारतीय कृषि में नई टैकनोलॉजी के प्रवेश द्वारा उत्पन्न प्रभावों तथा असंतुलनों का आलोचनात्मक अध्ययन किया। वर्तमान वर्षों में भारतीय कृषि में टैकनोलॉजी के प्रवेश से गुणात्मक रूपान्तरण प्रक्रम आरम्भ हो गया है जिसका महत्वपूर्ण लक्षण कृषक समाज के दृष्टिकोण तथा रुखों में परिवर्तन है तथा इससे तकनीकी उन्नति के फलस्वरूप गेहूँ के उत्पादन में क्रान्ति आ गयी है।

नकदी फसलों, दालों, धान तथा अन्य मोटे अनाजों के उत्पादन में इसी प्रकार की उन्नति अभी प्राप्त करनी है। गेहूँ के उत्पादन में इस टैकनोलॉजी की उन्नति से कुछ असन्तुलन उत्पन्न हो गया है जैसा कि नकदी फसलों तथा दालों के अन्तर्गत क्षेत्रफल में कमी तथा खाद्यान्न फसलों विशेषतः गेहूँ के अन्तर्गत क्षेत्र में वृद्धि से विदित है तथा इसे ठीक करना होगा।

आय तथा उत्पादन में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने तथा बढ़ती हुई जनसंख्या को भूख तथा अल्प पोषण से बचाने के लिए उन्होंने अधिक प्रयास तथा तीव्र अनुसन्धान पर बल दिया जिससे कि धान, नकदी फसलों तथा दालों के उत्पादन में क्रान्ति लायी जा सके। उन्होंने कुछ शोधक उपाय भी बताये जिन्हें नयी टैकनोलॉजी के प्रवेश द्वारा उत्पन्न असन्तुलनों तथा देश की भविष्य की आवश्यकताओं जैसे कि गेहूँ के आपेक्षिक मूल्य को घटाना, सभी अतिरिक्त कृषि के अन्तर्गत लाये क्षेत्रफल को नकदी फसलों के अन्तर्गत लाना भूमि जल साधनों के शीघ्र उपयोग के लिये प्रयत्नों को तेज करना, विशेषकर सिंधु-गंगा के मैदानों में, देश के सूखे क्षेत्रों में यन्त्रों द्वारा खेती करना तथा खाद्यान्न फसलों की प्रति हैक्टर उपज बढ़ाना, इत्यादि के लिये अपनाना आवश्यक है।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था की रजत जयन्ती अधिवेशन के उद्घाटन के अवसर पर 24 मार्च, 1972 को श्री जगजीवन राम, रक्षामंत्री एवं संस्था के प्रधान, द्वारा प्रारम्भिक भाषण

अपने प्रारम्भिक भाषण में श्री जगजीवन राम ने कहा कि संस्था के लिये यह सौभाग्य का विषय है कि डॉ० राजेन्द्र प्रसाद इसके संस्थापक प्रधान थे जिन्होंने न केवल इसकी स्थापना की, बल्कि 1947 में इसकी स्थापना के पश्चात् 15 वर्ष की अवधि में इसके कार्यों का मार्गदर्शन करने तथा उन्हें प्रोत्साहन देने में व्यक्तिगत रुचि ली। अपने अध्यक्षता काल में उन्होंने देखा कि संस्था कृषि सांख्यिकी के क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य कर रही है। वह इस बात से बहुत प्रसन्न थे कि संस्था ने कृषि तथा पशुपालन सांख्यिकी के क्षेत्र में मूल्यवान आँकड़ों के विश्लेषण के लिए एक अनुसंधान विभाग की स्थापना की तथा यह देश के विभिन्न भागों में अपने वार्षिक सम्मेलनों का आयोजन करती है, जिसमें अनुसंधान कार्यकर्ताओं द्वारा वैज्ञानिक लेख प्रस्तुत करने के अतिरिक्त आवश्यक विषयों पर संगोष्ठियों का आयोजन भी किया जाता है। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात से बड़ी प्रसन्नता है कि डॉ० राजेन्द्र प्रसाद तथा डॉ० वी० जी० पान्से, जिन्होंने संस्था की मूल्यवान सेवाएँ की, की स्मृति को बनाए रखने के लिए संस्था ने डॉ० राजेन्द्र प्रसाद तथा 'डॉ० पान्से' स्मारक भाषणों की स्थापना की है।

फिर उन्होंने कृषि क्षेत्र में सरकार द्वारा चलाये गये नये कार्यक्रमों पर बल दिया तथा कहा कि भारतीय कृषि में नई टैकनोलॉजी के प्रवेश से संख्याविदों का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है। उनका यह भी विचार था कि उन संख्याविदों, जिन्हें कृषि तथा पशुपालन के अन्य क्षेत्रों का ज्ञान है, ने नये कार्यक्रमों तथा नई नीतियों को कार्यान्वित करने में तथा अनुसंधान योजनाओं से उपयोगी आँकड़े प्राप्त करने में भारी योगदान देना होगा। उन्होंने आशा व्यक्त की, कि कृषि संख्याविद् निर्धन किसानों को अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने में अपना उत्तरदायित्व निभायेंगे तथा देश को "समाजिक न्याय के साथ-साथ उन्नति" की प्राप्ति में सहायता करेंगे।

भारतीय कृषि सांख्यिकीय संस्था के कार्यों का पुनर्विलोकन

मुझे भारतीय कृषि सांख्यिकीय संस्था के कार्यों का विवरण प्रस्तुत करने में बहुत प्रसन्नता है। यह वर्ष हमारे लिए विशेष महत्व का है क्योंकि इस वर्ष सस्था ने कृषि सांख्यिकी के विकास में उपयोगी सेवा के 25 वर्ष पूर्ण कर लिये हैं। यह ऐसा अवसर है जबकि हमें अपनी प्रगति, त्रुटियों तथा क्षमताओं पर विचार करना चाहिये।

1943 में बगाल में अकाल पड़ने के पश्चात् भारत सरकार ने देश में कृषि सांख्यिकी के सुधार की तरफ अधिक ध्यान दिया। अतः, डॉ० पी० वी० सुखात्मे के कुशल मार्गदर्शन में देश में फसलों के आँकड़ों के संकलन करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के विकास के लिए आई० सी० ए० आर० में एक प्रबल केन्द्र स्थापित किया। उस समय यह विचार किया गया कि यदि कृषि संख्याविदों की एक संस्था बना ली जाये तो इससे कृषि सांख्यिकी के क्षेत्र में होने वाले कार्यों के प्रचार में सहायता मिलेगी तथा यह संख्याविदों तथा अन्य वैज्ञानिकों के पारस्परिक विचार-विमर्श स्थल प्रदान करेगी। तदनुसार इस संस्था की स्थापना 1947 में डॉ० राजेन्द्रप्रसाद जो उस समय कृषि मन्त्री थे, डॉ० एम०एस० रनधावा, डॉ० पी०वी० सुखात्मे, श्री जो० डी० बिरला तथा अन्य कई व्यक्तियों के संरक्षण में हुई।

इसकी स्थापना के समय से ही संस्था ने अपनी पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। इस पत्रिका के द्वारा संस्था ने सांख्यिकी के क्षेत्र तथा कृषि पशुपालन, कृषि अर्थशास्त्र तथा सम्बन्धित क्षेत्रों में इसके प्रयोग में काफी महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्यों का प्रचार किया है। उदाहरण के लिये, डॉ० पी० वी० सुखात्मे तथा डॉ० वी० जी० पान्से द्वारा एक लेख जिसका शीर्षक था "भारत में फसल सर्वेक्षण" जिसमें भारत वर्ष में फसल सर्वेक्षणों का पूर्ण रीतिविधान दिया था भारत तथा विदेशों दोनों में ही कृषि संख्याविदों के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। इस लेख में विकासशील देशों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण करने का आधार प्रदान किया गया है। बहुत सी उपयोगी अभिकल्पनाएँ, जिनमें किसानों के खेतों के लिये उपयुक्त अभिकल्पनाएँ भी सम्मिलित हैं, असममित उपादानीय तथा अनुक्रिया पृष्ठ अभिकल्पनाओं के निर्माण तथा विश्लेषण के सामान्य सिद्धान्त में इस पत्रिका में प्रकाशित हुए।

तब से संस्था ने पत्रिका के 23 खंड प्रकाशित किये हैं। इस पत्रिका की भारत तथा विदेशों दोनों में ही बहुत माँग है। इस समय अपनी पत्रिका संचार के लिए संस्था के पास 500 चन्दा देने वालों की डाक सूची है जो देश के भी हैं तथा विदेश के भी। अन्य व्यक्तियों के अतिरिक्त इसमें, स्थायी सदस्य, साधारण सदस्य तथा बहुत बड़ी संख्या में संस्थात्मक सदस्य तथा

वे संस्थायें सम्मिलित हैं जिनके साथ संस्था के विनिमय सम्बन्ध हैं। इस वर्ष संस्था ने एक रजत जयन्ती अंक का प्रकाशन किया है जिसमें देश तथा विदेशों के सुप्रसिद्ध सांख्याविदों, अर्थशास्त्रियों तथा अन्य अनुसन्धान कार्यकर्त्ताओं द्वारा लिखे गये आमन्त्रित लेख दिये गये हैं। रजत जयन्ती के अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की गयी है।

संस्था की पत्रिका का एक महत्वपूर्ण लक्षण यह है कि इसमें प्रकाशित सभी लेखों का संक्षिप्त सार हिन्दी में दिया जाता है। संस्था ने 1948 में सांख्यिकीय शब्दों की एक हिन्दी शब्दावली भी प्रकाशित की थी। इससे हिन्दी में सांख्यिकीय पुस्तकें प्रकाशित करने में बहुत सहायता मिली।

अन्य पुस्तकों में संस्था ने डॉक्टर पी० वी० सुखात्मे द्वारा रचित एक पुस्तक जिसका शीर्षक है "सर्वेक्षणों के सिद्धांत, प्रयोगों सहित" प्रकाशित की। इस पुस्तक की देश तथा विदेशों में बहुत माँग थी। इस पुस्तक का एक अमरीकन संस्करण भी निकाला गया। इस पुस्तक का अनुवाद कई विदेशी भाषाओं में किया गया। इस पुस्तक के छपने के पश्चात् प्रतिवर्ष सर्वेक्षण सिद्धांतों में भारी प्रगति को ध्यान में रखते हुए इसे दोहराने की आवश्यकता महसूस की गयी अतः इसका पुनरीक्षण किया गया तथा इसे बढ़ाकर डॉ० पी० वी० सुखात्मे तथा डॉ० बी० वी० सुखात्मे के नाम से प्रकाशित किया गया। पुस्तक के नये संस्करण की भी बहुत माँग हैं तथा यह कृषि सांख्यिकी के लिए बहुत उपयोगी है।

स्वर्गीय डॉ० वी० जी० पान्से द्वारा संस्था को अर्पित की गयी सेवाओं के सम्मान में संस्था ने एक बधाई-पुस्तक, जिसका शीर्षक था (साँख्यिकी तथा कृषि विज्ञानों में लेख', का प्रकाशन किया। इसमें सुप्रसिद्ध सांख्याविदों, कृषि अर्थशास्त्रियों तथा सम्बन्धित क्षेत्रों में वैज्ञानिकों द्वारा लेख दिये गये।

संस्था का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है कृषि सांख्यिकी से सम्बन्धित वर्तमान रुचि के महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा का आयोजन करना। यह संस्था वार्षिक सम्मेलनों, विशेष व्याख्यानों, संगोष्ठियों, परिसंवादो इत्यादि का आयोजन करती रही है। संस्था ने डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जो कि संस्था के संस्थापक प्रधान तथा डॉ० वी० जी० पान्से जिन्होंने संस्था के कार्यों के विकास में बहुत योगदान दिया, की पुण्य स्मृतियों को बनाये रखने के लिये दो व्याख्यानों की स्थापना की जिन्हें 'डॉ० राजेन्द्र प्रसाद स्मारक व्याख्यान' तथा 'डॉ० पान्से स्मारक व्याख्यान' कहते हैं। साधारणतया यह व्याख्यान देश तथा विदेश के प्रमुख वैज्ञानिकों द्वारा दिए जाते हैं तथा इनमें उन प्रश्नों पर विचार किया जाता है जो कि देश को समृद्ध बनाने के लिये महत्वपूर्ण हैं। अब तक संस्था ने 24 तकनीकी भाषणों का जो कि इसके उद्घाटन अधिवेशनों में दिये गये, 25 विशेष व्याख्यानों तथा 42 संगोष्ठियों का आयोजन किया है। भारतीय कृषि अर्थशास्त्र संस्था

के सहयोग से संस्था ने दो परिसंवादों का आयोजन किया एक कृषि-उत्पादन के लिये योजना बनाना तथा दूसरा, कृषि में लागत अध्ययन करने की समस्यायें।

इन सम्मेलनों में नव तथा प्रगतिशील वैज्ञानिकों द्वारा सांख्यिकीय रीति विधियों तथा कृषि तथा पशुपालन तथा सम्बद्ध क्षेत्रों में इसके उपयोग पर लिखे गये अनेक अनुसन्धान लेख पढ़े गये। सम्मेलनों की कार्यवाही, जिसमें पढ़े गये लेखों के संक्षिप्त सार तथा परिसंवादों में प्रस्तुत किए गए लेखों के विस्तृत सारांश सहित सम्मिलित होते हैं, संस्था की पत्रिका में छापी जाती है।

संस्था का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य एक अनुसन्धान शाखा की स्थापना है। यह शाखा एक छोटी समिति के मार्गदर्शन में आधुनिक रुचि की समस्याओं पर अनुसंधान कार्य करती है। इस समय यह 'भारतवर्ष में पशुधन के आर्थिक विकास के लिये योजना बनाने के लिए सांख्यिकीय आधार का विकास' करने में व्यस्त है। इस शाखा के कर्मचारी अब तक कई लेख प्रकाशित कर चुके हैं। इस शाखा का वर्तमान रुचि की समस्याओं पर कार्य के लिये प्रयोग करने का तथा निजी तथा सरकारी क्षेत्रीय संगठनों को परामर्श सेवाएँ प्रदान करने के लिये प्रयोग करने का भी विचार है। इस शाखा को भारत सरकार से प्राप्त वित्तीय सहायता द्वारा चलाया जा रहा है। मुझे श्री जे० एस० शर्मा तथा श्री रामसरण, जो कि इस अनुसन्धान शाखा की स्थापना तथा इसके विकास तथा संचालन में अत्यधिक रुचि लेते हैं, के प्रति आभार प्रकट करने में बहुत प्रसन्नता है। सस्था इस शाखा में किए जाने वाले अनुसन्धान कार्य का मार्गदर्शन करने के लिए श्री वी० एन० आंबले के प्रति भी आभार प्रकट करती है।

यह संस्था अन्तर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय संस्थान की सदस्य है। इसके सम्मेलनों में बहुत से लेख प्रस्तुत किए गए थे, जो कि संस्था के बहुत से सदस्यों द्वारा पढ़े गए।

संस्था के 24वें वार्षिक सम्मेलन का आयोजन मद्रास में 31 दिसम्बर 1970 से 2 जनवरी 1971 तक मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा किया गया था। इसका उद्घाटन तमिलनाडु सरकार के खाद्य मंत्री श्री पी० यू० शन्मुगम द्वारा किया गया था। कलकत्ता विश्वविद्यालय के सहायक उपकुलपति प्रो० पी० के० बोस ने "भारतवर्ष में सांख्यिकीय प्रशिक्षण तथा अनुसन्धान पर कुछ विचार" विषय पर तकनीकी अभिभाषण किया। सम्मेलन में (i) "मॉडल प्रतिदर्शी प्रयोगों" तथा (ii) "उर्वरकों की माँग" विषयों पर दो परिसंवाद आयोजित किए गए। श्री सी० सुब्रामन्यम ने 'हरित क्रान्ति की कथा' विषय पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद स्मारक व्याख्यान दिया।

प्रस्तुत किए गए लेख पढ़ने के लिए दो बैठकें हुईं। इस सम्मेलन में प्रस्तुत किए गये लेखों के पढ़ने के लिए 'बायोमेट्रिक संस्था' तथा भारतीय कृषि सांख्यिकीय संस्था की एक संयुक्त बैठक भी आयोजित की गयी। तमिलनाडु सरकार की कृषि मंत्री श्रीमती एस० सत्यवनी मुथु ने "तमिलनाडु में कृषि श्रमिक" विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया। सम्मेलन के लिए श्रेष्ठ प्रबन्ध करने तथा इसके लिये वित्तीय सहायता के लिए संस्था परिषद् मद्रास विश्वविद्यालय तथा तामिलनाडु सरकार के प्रति अति आभारी है।

अपनी पत्रिका के प्रकाशन, सम्मेलनों के आयोजन तथा अनुसन्धान शाखा के संचलन के लिए संस्था अभी तक वित्तीय साधनों का ठोस आधार जुटाने में असमर्थ रही है। इसके लिए इसे केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों से, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् तथा कई अन्य संगठनों से प्राप्त अनुदानों पर निर्भर रहना पड़ता है। संस्था भारत सरकार, राष्ट्रीय, वैज्ञानिक संस्था, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् तथा महाराष्ट्र सरकार से प्राप्त वित्तीय सहायता के लिए आभार प्रकट करना चाहती है।

रेल अधिकारी 1958 से देश के विभिन्न भागों में हुए वार्षिक सम्मेलनों में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को रेल भाड़ों में रियायत देते रहे हैं। इसके कारण नए वैज्ञानिक तथा अन्य अनुसन्धान कार्यकर्त्ता भारी संख्या में सम्मेलनों में भाग ले सके। अब तक रेलवे बोर्ड यह रियायतें प्रार्थना भेजने पर देता रहा है। मुझे आपको यह सूचित करने में प्रसन्नता है कि इस वर्ष से उन्होंने यह रियायत स्थायी रूप से स्वीकृत कर दी है। संस्था अपने प्रतिनिधियों को दी गयी रेल-भाड़ों में रियायतों के लिए रेलवे बोर्ड के प्रति बहुत आभारी है।

संस्था के हिसाब-किताब की जाँच एक शासपत्रित लेखपाल द्वारा की जाती है। 1970-71 वर्ष के लिये संस्था के जाँच किए हुए लेखे का विवरण संलग्न है। संस्था लेखपाल द्वारा प्रदान की गयी सहायता के लिए आभारी है।

संस्था के सभी सदस्यों, कार्यकारी परिषद् के सदस्यों, संरक्षकों, सम्पादक गण तथा निर्णायकों की सक्रिय सहायता तथा सहयोग से संस्था अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने तथा अपने वर्तमान स्तर पर पहुँचने में सफल हुई है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी संस्था को सभी से सक्रिय समर्थन प्राप्त होगा तथा यह और उन्नति करेगी जिससे कि यह एक राष्ट्रीय महत्व के संगठन का रूप ग्रहण कर सकेगी।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था, नई दिल्ली

30 जून 1971 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आय तथा व्यय लेखा

व्यय				आय			
गत वर्ष (1)	(2)	(3)	वर्तमान वर्ष (4)	गत वर्ष (5)	(6)	(7)	वर्तमान वर्ष (8)
3451.70	**वेतनार्थ**	1683.22					
2588.76	कम : पत्रिका लेखा	**1262.42**	420.80	572.00	स्थायी सदस्यता वृत्तियाँ	585.69	
862.94	में स्थानान्तरित				साधारण सदस्यता वृत्तियाँ	2808.00	
	अन्य व्यय						
137 .70	डाक व्यय	921.40					3393.69
349.74	लेखन सामग्री तथा छपाई	157.66		2793.64	ब्याज (बचत लेखा)	252.23	
34.75	बैंक व्यय	27.25			सावधि जमा पर ब्याज	1700 21	
158.30	परिवहन व्यय	129.70		290.64	विविध व्यय	169.00	
75.02	विविध व्यय	518.80					
79.95	साईकल व्यय	57.76		2623.53			2121.44
325.00	लेखा परीक्षण फीस	300.00		28.00	डॉ० पान्से की पुस्तक		
541.40	दूरभाष व्यय	697.50			की बिक्री द्वारा आय		67.12
34.85	मनोरंजन व्यय	29.00					
	कुमारी ए० जार्ज का दौरा व्यय	1234.50					
12.47	विनिमय के कारण अन्तर						
105.06	पत्रिका की जिल्दों का व्यय						
3090.18		4073·57					
2317.64	कम पत्रिका लेखा में स्थानान्तरित	3062·67	1010·90				
772.54							

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
2255·00	डॉ० पान्से की पुस्तक की बिक्री तथा मुफ्त बंटवारे से वास्तविक हानि।						
	वार्षिक सम्मेलन व्यय						
1560 00	भ्रमण व्यय		850·00				
353·90	अन्तर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय संस्थान हेग की सदस्यता वृत्ति						
256·17	सदस्यता शुल्क जिसे रद्द कर दिया गया						
	रद्द किया गया अवमूल्यन						
21·00	फर्नीचर में 10% की दर से	19·00					
14·00	साईकल में 15% की दर से	13.00	32·00				
212·26	व्यय के अतिरिक्त आय जिसे मुख्य जमा में डाला गया		3268·55				
6307·81		योग रु०	5582·25	6307·81		योग	5582·25

हमारी इस तिथि की रिपोर्ट आधीन
सी० एस० भटनागर एण्ड क० की ओर से
ह०/
शासपत्रित लेखपाल

64, रीगल बिल्डिंग,
नई दिल्ली
दिनाँक 22.3.72

भारतीय कृषि सांख्यिकीय संस्था, नई दिल्ली

30 जून, 1971 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आय व्यय (पत्रिका) का लेखा

व्यय			आय			
गत वर्ष (1)	(2)	(3)	वर्तमान वर्ष (4)	गत वर्ष (5)	(6)	(7)	वर्तमान वर्ष (8)
3063.27	बचा हुआ माल		3355.80	8124.90	पत्रिका के लिये प्राप्त चन्दा		9640.80
8914.80	पत्रिका की छपाई का व्यय		7220.78	52.50	रायल्टी प्राप्त की गई		
					अनुदानों द्वारा		
2588.76	कर्मचारियों के वेतन (समानुपातीय)		1262.42	500.00	कृषि निदेशक, महाराष्ट्र राज्य, पूना		
2317.64	अन्य व्यय (समानुपातीय)		3062.67				
				1.00	खण्ड × VII(I) तथा (II)		
					नाम मात्र मूल्य		
				370.84	खण्ड 18 (I)		
				392.00	खण्ड 18 (II)	1.00	
				328.24	खण्ड 19 (I)	305.68	
				308.24	खण्ड 19 (II)	292.68	
				62.30	खण्ड 20 (I)	18.69	
				222.68	खण्ड 20 (II)	181.66	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
				892.32	खण्ड 21 (I)	858.00	
				777.48	खण्ड 21 (II)	727.32	
				— —	खण्ड 22 (I)	820.10	
				— —	खण्ड 22 (II)	870.46	4075.77
				4851.27	कमी जिसे सन्तुलन पत्र में स्थानान्तरित किया		1185.10
16,884.47			14,901.67	16,884.47			14,901.67

64, रीगल बिल्डिंग
नई दिल्ली
दिनांक : 23.1.72

हमारी इसी तिथि की रिपोर्ट के आधीन
सी० एस० भटनागर एण्ड कम्प० की ओर से
ह०/-
शा।सपत्रित लेखपाल